डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित किसान की आर्थिक स्थिति

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि गाँव से बना अपना देश कृषि पर निर्धारित है। भारतीय जीवन का यथार्थ गाँव में है। भारत वर्ष गाँव से बना है, यदि कोई भारत की मूल संस्कृति एवं आत्मा का दर्शन करना चाहता है तो ग्राम से प्राप्त कर सकता है। भारतीय जीवन तथा सभ्यता का मूल स्रोत मंत्र कृषि है और उसका विस्तार ग्रामजीवन में ही परिलक्षित होता है। गाँव में रहने वाले लोग कृषि से संबंधित हैं,जो ग्राम जीवन का मुख्य अंग हैं, कृषि से संबंध कार्य करने वाले किसान कहलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि भारत कछार आँचल से बना कृषिप्रधान देश है। इसी कृषि प्रधान देश में महान कृषिपुत्र डॉ रामदरश मिश्र जी का जन्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर ज़िले के 'डुमरी' गाँव में हुआ था और गाँव के मिट्टी के साथ जुड़े होने से किसान की वास्तविकता को अपनी साहित्य का प्रमुख अंग बनाया है, इसी मिट्टी के गंध को स्वयं अनुभूतिपूर्ण छोटे-छोटे बातों को प्रस्तुत किया हैं।

किसान के जीवन की विविध स्थितियों के द्वारा जानने तथा समझने के लिए विविध दृष्टिकोन के आधार पर किसान और आर्थिक स्थिति तथा परिस्थिति उपन्यासों में देख सकते हैं। जिसमें स्वातंत्र्योत्तर काल का लेखा-जोखा चित्र, सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों पर प्रकाश डालकर, प्रासंगिकता को केंद्र बनाकर प्रस्तुत किया गया हैं।

स्वातंत्र्यपूर्व काल में देखा जाए तो किसान की आर्थिक स्थिति में कमजोरी के कारण क्या सामंतवादी थिति तथा महाजन,जमींदारी थी। किसान,महाजन तथा साहुकार के षड्यंत्र में फसता हुआ दरिद्र होता जा रहा था? किसान अंग्रेजों साम्राज्यवादियों के बीच अन्तर्विरोध बढ़ता जा रहा था। परिणामस्वरूप किसान एवं जमींदारों के बीच टकराहट हो रही थी। अंग्रेजों के आगमन के कारण भारतीय किसानों का मूल्याच्छेदन हो रहा था। अंग्रेजों के आने से किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर बनती जा रही थी। क्या सामंती प्रथा धीरे-धीरे छिन्न-विच्छिन्न हो गई थी? ग्रामों में शांति का सूत्रपात लुप्त होता हुआ दिखाई दे रहा था? ऐसे कई प्रश्न है, जो हमें स्वतंत्रता पूर्व की किसान की आर्थिक स्थिति सामने लाने में प्रमाण के तौर पर देखे जा सकते हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल में किसान की आर्थिक कमजोरी तथा काम करने के लिए अलग-अलग बन्धन से उलझाता हुआ दिखाई दे रहा था। अलग-अलग क्षेत्रों में सुविधाओं की दृष्टि से देखा जाए तो सड़कें, बिजली, स्कूल आदि पहुँच गई थीं। फिर भी भारतीय किसानों में बदलाव का चित्र वैसा ही था। जातिवाद, परंपरा से

उलझा हुआ किसान 'बंदी समान' सदस्य रह गया था। अधिकांश किसान अपनी जाति के किसानों के साथ ही व्यवहार और कार्य में अधिक सक्रिय थे। इसीलिए भारतीय कृषक जीवन में आर्थिक दृष्टि से कुछ अंश में परिवर्तन दिखाई दे रहा था। लेकिन सरकार द्वारा अलग-अलग योजनाओं को उनके तक पहुँचने नहीं दिया। सन् १९५० के बाद सरकार ने भूमि सुधार के लिए तेज कदम उठाए इस भूमि सुधार से कुछ ही किसानों का लाभ हुआ।

दूसरी और किसान धार्मिकता में उलझा हुआ एवं प्राकृतिक साधनों पर निर्भर होने के कारण अनेक देवी देवताओं की पूजा आर्का करना भूत-प्रेत जादू टोना आदि पर विश्वास रखना। आज भी यह चित्र गाँव-गाँव में दिखाई देता है। अपने जीवन मूल्य को छोड़कर आस्था मान्यताओं पर अधिक श्रद्धा होने के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है।

कृषक जीवन में पर्याप्त जटिलता पैसे पर निर्भर है। व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में पैसा ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण जीवन में जो परिवर्तन होना चाहिए था, जितनी अपेक्षा की थी वह परिवर्तन 'न' के बराबर हुआ है। इससे गरीबी बेरोजगारी के कारण किसान एवं उनके परिवार जनों पर बुरा असर हो रहा हैं। परंपरागत तथा आर्थिक मूल्य के आधार पर भोगवादी तथा व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि को अधिक महत्व दिया गया। निम्न वर्ग के द्वारा किए गए संघर्ष संघर्ष विविध कमजोरी के द्वारा अपने कार्य के लिए डटे रहना यह सभी समस्याएँ मिश्र जी के उपन्यासों में चित्रित है। किसनों की आर्थिक स्थिति को लेकर उपन्यासों में चित्रित पात्र जो की प्रमाण के तौर पर विश्लेषणात्मक अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

मिश्र जी के उपन्यासों में स्वतंत्रता पूर्व घटित घटनाओं का कालखंड है, जो कि जमींदार महाजन एवं मुखिया के द्वारा किए जाने वाले आर्थिक शोषण से गरीबी स्थिति आर्थिक दशा जमीदार मुखिया आदि के पास खेत गिरवी रखना। मुखिया से कर्ज लेना एवं लिया हुआ कर्ज सूद के साथ वापस करना कर्ज वापस नहीं किया तो दुगना कर्ज वसूल करना आदि का चित्र बड़ी सटीकता से उपन्यासों में मिलता है। 'पानी की प्राचीन' उपन्यास में 'बैजू' ब्राह्मण होकर भी जमीन 'विद्या' को अपने यहां पनाह देता है और यहां बात मुखिया को अच्छी नहीं लगती। अपने षड्यंत्र में अटका कर बुढ़िया को मुखिया फसाता है और पैसे का इंतजाम करने के लिए कहता है तब "बैजू की माँ अपनी मोटी-सी हँसुली गले से निकालती हुई बोली मुखिया बाबू, यह हँसुली ही मेरे पास जो कुछ है सो है। इसे गेंदा की शादी में देने के लिए रखा था। मगर ले जाइए। कहीं रखकर रुपए ला दीजिए, बड़ी मेहरबानी होगी।"१ मुखिया ने हसूली अपने पास ही रखकर दरोगा को पचीस रुपए देकर बैजू को छुड़वा देता है।

'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास' में मिश्र जी ने महाजन, शामदेव अपने गाँव के गरीब, मजदूर, किसानों को कर्ज देकर उनका आर्थिक शोषण कर रहे हैं। इसलिए उनका विरोध करने के लिए कोई सामने नहीं आता। 'शिकारीपुर' का 'जैराम' इन गरीबों का दर्द समझते हुए कहता है, "क्या करे ये बेचारे? हर साल शामदेव के यहाँ से कर्ज-पताई लाते हैं, खेत है और दबे हुए हैं। जब गाँव के पट्टीदार शामदेव से दबते हैं, और सही बात कहना तो दूर रहा और उसकी गलत बात का साथ देते हैं तो इन छोटी जातियों को कौन कहे?"२ आज भी यह शोषण का चित्रण हमारे सामने देखने को मिलता है। शोषित वर्ग के संघर्ष को सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखते हैं और एक हद तक उनका समर्थन भी करते हैं। स्वयं मिश्र जी ने इसके बारे में लिखा है, "किन्तु मैंने अनुभव से यही जाना है कि गाँवों में अभी भी हरिजन खेतीहीन हैं, उपेक्षित हैं, गाँवों के नये धनवानों, नेताओं और गुंडों से पीड़ित हैं,यद्यपि उनमें धीरे-धीरे आत्मगौरव का भाव जाग रहा है। मैंने अभिशप्त वर्गों की आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक यानी सभी तरह की पीड़ा को किसी राजनीतिक दल का चश्मा लगाये बगैर भी पकड़ने की कोशिश की है।"३ स्वयं मिश्र जी ने आर्थिक शोषण, मुखिया, जमींदारों द्वारा किए जाने वाले अत्याचार का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

नौकर वर्ग द्वारा किए जाने वाला आर्थिक शोषण से देखे तो सरकारी ऑफीसर अधिकांश गाँव में किसानों का शोषण करते हुए दिखाई देते हैं। किसान का छोटे से छोटा काम करने के लिए उनसे से पैसे लिए जाते हैं। 'बीस बरस' उपन्यास में थानेदार नौकरी पर थे तो तब वह लोगों का आर्थिक शोषण करते रहे और अपना स्वार्थ सीधा कर लिया। नौकरी से सस्पेंड कर दिये गये तो नेतागीरी में गए हैं। अब गाँव के प्रधान होकर पैसा कमा रहे हैं। "पहले थानेदार थे। बहुत गलत काम किये तो नौकरी से निकाल दिए गए। थानेदारी में खूब पैसा कमाया था। खेती-बारी, घर-दुआर सब कुछ खूब दुरूस्त कर लिया। नौकरी से निकालने जाने के बाद नेता हो गये।"४ यही सरकारी नौकरों द्वारा लोगों का आर्थिक शोषण करके अपनी झोली भर रहे हैं।

भारत देश की अर्थव्यवस्था किसानों पर निर्भर है लेकिन किसान से लगान वसूल करने की प्रथा आज भी हमें गाँव-गाँव में दिखाई देती है, हां रूप बदला है लोग बदले हैं शोषण तो हो रहा है।'पानी के प्राचीर' में उत्तर प्रदेश के कछार अँचल में बसे लोगों की दयनीय दशा का चित्रण मिलता है। उपन्यास में किसान से लगान वसूल करने का चित्र हमारे सम्मुख आता है। मुंशी दुक्खीलाल गजेन्द्र बाबू के यहाँ सीनियर तहसीलदार हैं। किसानों के ऊपर दो-दो साल की लगान बाकी है ऐसे बीस किसान सामने खड़े हैं। मुंशी जी किसानों को सिपाही के अधीन करते हैं। बीसों किसान हैं वह भी फटे हाल, नंगे बदन, धूल-धूसरित सरवाले। इन्हें मुंशी जी बारी-बारी से मुर्गा बनाकर पीटते हैं। मुंशी जी किसानों पर गरजते हुए कहते हैं। "मैं सबकी नस

पहचानता हूँ तुम सब साले चोर हो, बिना मारे तो सुनते ही नहीं हो। लात के देवता हो बात से क्यों मानोगे ? दो-दो साल की लगान बाकी है।"५ गरीब किसानों पर होने वाले अन्याय देखते हुए नीरू का दिल फट जाता है। वह देखता है, "इन किसानों के घर पर दर्द से टूटती हुई एक अर्द्धनग्न नारी है, जवानी भार से माती और अभावों के श्रृंगार से बोझिल एक बेटी है, टूटी मड़ैया के नीचे बड़े पेटवाला एक लड़का भूख से बोझिल एक बेटी है, टूटी मड़ैया के नीचे बड़े पेटवाला एक लड़का भूख से छटपटा कर रहा है। .....आह .... गरीबी.... गरीबी.....गरीबी...।"६

'थकी हुई सुबह' में लक्ष्मी की माँ बीमारी से तड़प रही है। लक्ष्मी के भाई उसकी माँ का इलाज आर्थिक अभाव के कारण न कर पाते हैं। लक्ष्मी अपने भाई से पूछती है कि माँ का इलाज गोरखपुर में अच्छे डॉक्टर के पास क्यों नहीं किया। कुछ देर बाद भाई की गरीबी और पैसे के अभाव का यथार्थ समझ में आता है। लक्ष्मी ने अनुभव किया कि, "उसने क्या कह दिया। गोरखपुर के डॉक्टर को दिखाना आसान है क्या? भरपेट खाने को तो मिलता नहीं, भइया डॉक्टर की फीस और दवा-दारू के पैसे कहाँ से लायेगा। "७ लक्ष्मी माँ की बीमारी के बारे में जकड़ी जा रही है, सही बात यह है कि माँ को बीमारी गरीबी की है। गरीबी के कारण ही माँ की मृत्यु हो जाती है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में मिश्र जी ने समाज में हर तरह के लोगों में से व्यापक अर्थाभाव को ही केंद्र में रखकर समाज के विविध पहलुओं को रेखांकित किया है और उनका यथार्थ वर्णन किया है, व्यापक अर्थाभाव के कारण मनुष्य क्या और कुछ भी कर नहीं सकता है। ऐसे ही व्यापक अर्थाभाव के परिवार हैं वैसे ही रह जाते हैं। लेखक ने उपन्यास के माध्यम से वास्तविकताओं को केंद्रबिन्दु बनाकर चित्रण किया है।

मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में आर्थिक पक्ष को लेकर आर्थिक शोषण, किसान और लगान, जमींदारी उन्मूलन, चकबंदी, रोजी-रोटी की खोज, मँहगाई, अर्थ विवाह और दहेज, अर्थ और बढ़ती जनसंख्या आदि तत्त्वों को लेकर उपन्यासकार ने अपने उपन्यासों में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

संदर्भ

१) डॉ रामदरश मिश्र – पानी की प्राचीर पृष्ठ क्रमांक ५४
२) डॉ रामदरश मिश्र – सूखता हुआ तालाब पृष्ठ क्रमांक १७
३) स. भीष्म साहनी – डॉ रामदरश मिश्र, भगवती प्रसाद निदारिया – आधुनिक हिंदी उपन्यास – १९३ एवं १९८
४) डॉ रामदरश मिश्र – बीस बरस पृष्ठ क्रमांक -१०८
५) डॉ रामदरश मिश्र – पानी की प्राचीर पृष्ठ क्रमांक -२०८
६) डॉ रामदरश मिश्र – पानी की प्राचीर पृष्ठ क्रमांक -२०९
७) रामदरश मिश्र – थकी हुई सुबह पृ. क्र -९१